History of Western Philosophy, TDC Part-II - IV Paper

पाश्चात्य दर्शन का इतिहास (बुद्धिवाद और अनुभववाद)

डॉ. विजय कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग
लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में परस्पर दो विरोधी धाराएँ देखने को मिलती हैं- बुद्धिवादी (Rationalism) विचारधारा और अनुभववादी (Empiricism) विचारधारा। परस्पर इन विरोधी विचारधाराओं का समन्वय काण्ट के दर्शन में देखने को मिलता है। बुद्धिवादियों का यह मानना है कि हमारे समस्त ज्ञान हमारी बुद्धि की उपज हैं। इनके अनुसार बुद्धि ही समस्त ज्ञान की जननी है, यही स्रोत है जहाँ से ज्ञान प्रस्फुटित होता है। यही वह साधन है जिसके आधार पर सत्य ज्ञान की प्रामाणिकता की जाँच की जाती है। ठीक इसके विपरीत अनुभववादियों के अनुसार इन्द्रियानुभूतियाँ ही हमारे ज्ञान के एकमात्र स्रोत हैं। अनुभव ही ज्ञान का साधन और प्रमाण है। अर्थात् समस्त ज्ञान स्वअर्जित होता है। अनुभव से परे कुछ भी सत्य नहीं अर्थात् दृष्टि ही सृष्टि है।

बुद्धिवादी विचारधारा

बुद्धिवादियों के अनुसार बुद्धि ही मानवीय विशेषता है जिसके द्वारा समस्त ज्ञान की प्राप्ति संभव है। बुद्धिवादी विचारधारा के अनुसार निश्चितता (Certainty) और सार्वभौमिकता (Universality) ज्ञान की दो प्रमुख विशेषता है। इस विशेषताओं से युक्त ज्ञान जन्मजात प्रत्ययों पर आधारित होता है। ये जन्मजात प्रत्यय मानवीय बुद्धि में उसी प्रकार निहित होते हैं जिस प्रकार हम अपने शरीर के अंगों को जन्म से ग्रहण करते हैं। देकार्त के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के मन में जन्मजात प्रत्यय निहित होते हैं और यह प्रत्यय ठीक उसी प्रकार निहित होते हैं जिस प्रकार उदारता किसी परिवार का निहित गुण होता है या फिर जिस प्रकार हम कहते हैं कि लकवा या गुर्दे का रोग कुछ परिवार में जन्मजात होते हैं। या ईश्वर का प्रथ्यय, अमरता का प्रत्यय आदि। आत्मतत्त्व का ज्ञान एक निश्चित एवं सार्वभौम ज्ञान होता है।

इस प्रकार के दार्शनिकों में **देकार्त, स्पिनोजा और लाइब्नित्ज** के नाम आते हैं।

बुद्धिवाद की मान्यताएँ

१. बुद्धि ही ज्ञान की जननी है। बुद्धि की सक्रियता से ही आत्मा में निहित जन्मजात प्रत्यय बाहर निकलते हैं।

२. बुद्धिवादी निगमनात्मक (Deductive) पद्धत्ति द्वारा आत्मा में निहित जन्मजात प्रत्ययों की सत्यता स्वीकार कर ईश्वरीय अस्तित्व की स्थापना करते हैं।
३. जन्मजात प्रत्ययों के आधार पर हमें जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त होता है उस पर लेश मात्र भी संशय नहीं किया जा सकता, क्योंकि इस जन्मजात प्रत्यय का निर्माता ईश्वर है, जो सम्पूर्ण, अनन्त एवं सत्यप्रिय है।
४. बुद्धिवादी ज्ञान को अनिवार्य (Necessary) तथा सार्वभौम (Universal) स्वीकार करते हैं।

अनुभववादी विचारधारा

अनुभववादी विचारधारा के अनुसार अनुभव ही समस्त ज्ञान का आधार है। मानवीय ज्ञानकोश में ऐसा कुछ भी नहीं जो बाह्य अनुभूतियों से प्राप्य न हो। जन्म के समय हमारा मन कोरे कागज की भाँति रहता है जिस पर कुछ भी लिखा नहीं रहता। दिन प्रति दिन के अनुभव से ही हमारे ज्ञान का भण्डार भरता है। जैसे- अग्नि को छूने से अंगूली जलती है, यह हमारा एक विशेष अनुभव है और जब व्यावहारिक जीवन में बार-बार यह अनुभव हमें प्राप्त होता है तो इस अपरिवर्तित एवं अकाट्य अनुभूति के आधार पर हम यह ज्ञान अर्जित करते हैं कि अग्नि में जलाने की शक्ति है।

इस परम्परा के दार्शनिकों में **लॉक, बर्कले और ह्यूम** का नाम आता है।

अनुभववाद की विशेषताएँ

१. हमारा समस्त ज्ञान अनुभवजन्य है, जो संवेदना और स्वसंवेदना से निर्मित होता है।
२. अनुभववादी आगमनात्मक (Inductive) प्रणाली को स्वीकार करते हैं।
३. हमारा कोई भी ज्ञान जन्मजात नहीं होता, बल्कि सभी ज्ञान अर्जित होते हैं। अर्थात् दृष्टि ही सृष्टि है (Esse Est Percipi)